विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७ ।।

हे धनीजी! जो आपकी ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से उसे खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सोहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८ ।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता है। रत्नों से जड़े हुए (सब सुख से भरे) घर लगता है कि खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके न रोए।
राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए।।९ ।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में, किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख-सामग्री का त्यागकर आपके विरह में भटकती है।

विरहा न देवे बैठने, उठने भी न दे।
लोट पोट भी न कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१० ।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और न लेटने देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की स्वांस चल रही है।

आठो जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११ ।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लग गई, जिससे कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

ए बिध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच का टालने, ताथें विरहा प्रवान।।१२ ।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया। मैंने यह जो ऊपर के वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो जाने से था। अब वह परदा हट गया।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १६९ ।।

राग मेंवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरो होए।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए।।मेरे दुलहा।।
तारुनी तलफे विलखे विरहनी, विरहनी विलखे कलपे कामनी।।टेक।। १ ।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है। इसलिए, हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलखकर विरह में तड़प रही हूं। मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App

बिछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए।
सो झालें बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दुःख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दुःख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड न देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के विघन आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता, अर्थात् और किसी तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! आपकी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह का बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो ना उठ सकी, रही मूल अंकूर भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी सराबोर हो गई कि मुझसे उठा ही नहीं गया। अब तो केवल परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट न पाइए पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है, जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १७६ ॥

राग मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, न कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

स्वामीजी कहते हैं इश्क सबसे बड़ा है। कोई और उसके समान नहीं है। एक आपके इश्क बिना सब दुनियां व्यर्थ हो गई है।

Nijanand App